कुंवर नारायण

मामूली जीवन जीते हुए

जानता हूं कि मैं
दुनिया को बदल नहीं सकता
न लड़ कर
उससे जीत ही सकता हूं

हां लड़ते-लड़ते शहीद हो सकता हूं
और उससे आगे
एक शहीद का मकबरा
या एक अदाकारा की तरह मशहूर...

लेकिन शहीद होना
एक बिल्कुल फर्क की तरह मामला है

बिल्कुल मामूली जिंदगी जीते हुए भी
लोग चुपचाप शहीद होते देखे गए हैं

क्या वह नहीं होगा

क्या फिर वही होगा
जिसका हमें डर है ?

क्या वह नहीं होगा
जिसकी हमें आशा थी ?

क्या हम उसी तरह बिकते रहेंगे बाजारों में
बाजारों में
अपनी मूर्खताओं के गुलाम ?

क्या वे खरीद ले जायेंगे
हमारे बच्चों को दूर देशों में
अपना भविष्य बनवाने के लिए ?

क्या वे फिर हमसे उसी तरह
लूट ले जायेंगे हमारा सोना
हमें दिखा कर कांच के चमकते टुकड़े ?

और हम क्या इसी तरह
पीढ़ी-दर-पीढ़ी
उन्हें गर्व से दिखाते रहेंगे
अपनी प्राचीनताओं के खण्डहर
अपने मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे ?

प्रस्तुति : प्रभात